जैव विकास की दिशा पलटती भी है

डार्विन के सिद्धांत के मुताबिक जैव विकास में दिशा तय करने का काम प्राकृतिक चयन की शक्ति करती है। वर्तमान दौर में मनुष्य का दबाव भी एक शक्तिशाली कारक बनकर उभरा है। पर्यावरण पर मनुष्यों के प्रभाव ने जैव विकास पर काफी असर डाला है।

जैसे, कोई प्रजाति कई बार दो अलग-अलग प्रजातियों में बंट जाती है। किसी प्रजाति के जीवों में विविधता उत्पन्न होती रहे और फिर किसी कारण से उनके बीच कोई ऐसी बाधा खड़ी हो जाए कि वे आपस में प्रजनन क्रिया न कर सकें, तो लम्बे समय में ऐसा भी हो सकता है कि विविधता इतनी बढ़ जाए कि वे फिर से परस्पर प्रजनन करने में सक्षम ही न रहें। इसी मुकाम पर हम कहते हैं कि दो प्रजातियां अलग-अलग हो गईं।

प्रजनन में यह अवरोध भौतिक भी हो सकता है और अन्य किस्म का भी हो सकता है। प्रजातियों के अलग-अलग हो जाने के बाद यह अवरोध हट जाने पर भी परस्पर प्रजनन सम्भव नहीं रहता। मगर अब कुछ प्रमाण मिले हैं कि कभी-कभी प्रजातियां फिर से एक भी हो सकती हैं। जैसे डार्विन ने गेलापेगॉस द्वीप समूह पर जिन पक्षियों का अध्ययन किया था, उनमें यह बात देखी जा रही है। कनाडा के जैव विकास विद एंड्रयू हेण्ड्री ने हाल ही में यह बात खोज निकाली है।

1960 के दशक के रिकॉर्ड से पता चलता है कि सांटा क्रुज़ द्वीप पर एक फिंच पक्षी था - इसमें दो तरह के पक्षी पाए जाते थे। एक लम्बी चोंच वाले और दूसरे छोटी चोंच वाले। ये अलग-अलग तरह के बीज चुगने में माहिर थे। मध्यम चोंच वाले फिंच नहीं होते थे। अब चालीस साल बाद स्थिति बदल गई है - अभी भी द्वीप के कम घनी आबादी वाले क्षेत्रों में तो दो तरह के फिंच ही हैं मगर शहरी क्षेत्रों के आसपास मध्यम साइज़ की चोंच वाले फिंच भी नज़र आने

लगे हैं। हेण्ड्री का ख्याल है कि शहरों के आसपास लोग इन पक्षियों को चावल चुगने को देते हैं, इसलिए अलग-अलग साइज़ के बीज खाने में प्रवीणता का महत्व कम हो गया है। यानी मध्यम चोंच से अब कोई नुकसान नहीं होता।

इसी प्रकार की प्रक्रिया एक मछली स्टिकलबैक के बारे में भी देखी गई है। कनाडा के वैन्कूवर द्वीप की झीलों में स्टिकलबैक की एक प्रजाति झील के पेंदे में रहती थी और दूसरी सतह पर। इन दोनों का भोजन इन्हीं क्षेत्रों में होता था। मगर बाहर से डाली गई क्रेफिश ने झीलों का पानी खंगाल डाला और पूरा पानी मटमैला हो गया। अब स्टिकलबैक की दोनों प्रजातियां झील के एक ही स्तर पर भोजन प्राप्त करती हैं। भोजन प्राप्ति का स्तर इनके बीच एक अवरोध के रूप में था, वह ढह गया है।

एक तरह से मनुष्य की गतिविधियों के कारण प्राकृतवासों के बीच अन्तर धूमिल पड़ जाते हैं या प्रजातियां इधर-उधर भेजी जाती हैं। ऐसे में प्रजातियों के पुनर्मिलन की संभावना बढ़ जाती है, बशर्ते कि वे बहुत दूर न जा चुकी हों। इस प्रक्रिया में प्रजातियों का लोप स्वाभाविक है। ***(स्रोत फीचर्स)***